# धर्मशिक्षा

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः

—महर्षि कणाद।

—:०:—

लेखक

**पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी**

—:०:—

प्रकाशक

**रामनारायण लाल बेनी माधव**

प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता

इलाहाबाद

तेरहवीं आवृत्ति] १९६२ [मूल्य २ रु० ५० न० पै०

धर्म का ही संक्षेप में, निरूपण किया गया है। जिसको मैंने हिन्दूधर्म समझा है, और जिसमें मतभेद बहुत कम है, उसी का संग्रह किया है। फिर भी धर्मजिज्ञासु सज्जनों से मेरी प्रार्थना है कि इससे धर्म की सच्ची बात, जो उन्हें दिखलाई दे, उसी को वे ग्रहण करें; और मतभेद की बातों को मेरे लिए छोड़ दें।

विद्वान् सज्जनों से मेरी विनम्र प्रार्थना है कि जो कुछ त्रुटियाँ पुस्तक में दिखाई दें, मुझको अवश्य सूचित करें। उपयोगी सूचनाओं को ग्रहण करके संस्करण में आवश्यक संशोधन कर दिया जायगा। मेरी हार्दिक इच्छा है कि पुस्तक आर्य-हिन्दू धर्म के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो।

---

# अनुक्रमणिका

## पहला खण्ड

### (धर्म क्या है)


| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| धर्म | ४ | (६) इन्द्रियनिग्रह | २६ |
| (१) धृति | ८ | (७) धी (बुद्धि-विवेक) | ३४ |
| (२) क्षमा | १२ | (८) विद्या | ३८ |
| (३) दम | १६ | (९) सत्य | ४२ |
| (४) अस्तेय | २१ | (१०) अक्रोध | ४६ |
| (५) शौच | २५ | (११) धर्म-ग्रन्थ | ५० |


## दूसरा खण्ड

### (वर्णाश्रम-धर्म)


| | | | |
|---|---|---|---|
| (१) चार वर्ण | ५९ | (३) पाँच महायज्ञ तथा सोलह संस्कार | ८४ |
| (२) चार आश्रम | ७७ | | |


## तीसरा खण्ड

### (आचार-धर्म)


| | | | |
|---|---|---|---|
| (१) आचार | ९० | (७) ईश्वर-भक्ति | १२० |
| (२) ब्रह्मचर्य (वीर्यरक्षा) | ९४ | (८) गुरुभक्ति | १२३ |
| (३) यज्ञ | ९९ | (९) स्वदेशभक्ति | १२७ |
| (४) दान | १०५ | (१०) अतिथि-सत्कार | १३२ |
| (५) तप | ११० | (११) प्रायश्चित्त और शुद्धि | १४२ |
| (६) परोपकार | ११५ | (१२) अहिंसा तथा गोरक्षा | १५२ |

## चौथा खण्ड

### (दिनचर्या)


| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| (१) ब्राह्ममूहूर्त | १५८ | (४) भोजन | १६६ |
| (२) स्नान | १६० | (५) निद्रा | १७० |
| (३) व्यायाम | १६३ | | |


## पाँचवाँ खण्ड

### (अध्यात्म-धर्म)


| | | | |
|---|---|---|---|
| (१) ईश्वर | १७७ | (४) पुनर्जन्म | १९० |
| (२) जीव | १८० | (५) मोक्ष | १९६ |
| (३) सृष्टि | १८७ | | |


## छठवाँ खण्ड

### (सूक्ति-संचय)


| | | | |
|---|---|---|---|
| (१) विद्या | २०० | (११) स्त्री | २१४ |
| (२) सत्संगति | २०१ | (१२) परस्त्री-निषेध | २१५ |
| (३) सन्तोष | २०२ | (१३) दैव | २१५ |
| (४) साधुवृत्ति | २०५ | (१४) परगृह-गमन | २१७ |
| (५) दुर्जन | २०६ | (१५) राजनीति | २२० |
| (६) मित्र | २०८ | (१६) कूटनीति | २२१ |
| (७) बुद्धिमान् | २०९ | (१७) साधारणनीति | २२३ |
| (८) मूर्ख | २१० | (१८) व्यवहारनीति | २२५ |
| (९) पण्डित और मूर्ख | २११ | (१९) स्फुट | २२७ |
| (१०) एकता | २१३ | | |


## परिशिष्ट


| | | | |
|---|---|---|---|
| (१) जप-यज्ञ | २३१ | (३) दाम्पत्य धर्म | २४३ |
| (२) कीर्तन-भक्ति | २३५ | | |


---

# पहला खण्ड

## धर्म क्या है

"दशलक्षणको धर्मः सेवितव्यः प्रयत्नतः"

—मनु० अ० ६—९१